पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना

विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना (ई.एस.आई.पी.) सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन और जीविका लाभ के माध्यम से अनुकूलन आधारित शमन के लिए मॉडल का प्रदर्शन करके ग्रीन इंडिया मिशन के लक्ष्यों का समर्थन करता है। ई.एस.आई.पी. जैवविविधता और कार्बन स्टॉक सहित प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए नए उपकरण और प्रौद्योगिकी का प्रयोग कर रहा है। परियोजना के मुख्य घटक हैं: वानिकी और भूमि प्रबंधन कार्यक्रमों में सरकारी संस्थानों की क्षमता को मजबूत करना, वन गुणवत्ता में सुधार करना, और सतत् भूमि और पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणालियों को बढ़ाना। ई.एस.आई.पी. को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के समग्र मार्गदर्शन में भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्, छत्तीसगढ़ वन विभाग और मध्य प्रदेश वन विभाग द्वारा मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ राज्यों के चुनिन्दा भूभागों में क्रियान्वयित किया जा रहा है।

प्रकाशित :

ई.एस.आई.पी.– परियोजना कार्यान्वयन इकाई
जैव विविधता और जलवायु परिवर्तन प्रभाग
भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248 006
वेबसाइट : www.icfre.gov.in

कॉपीराइट@ICFRE, 2020

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

परियोजना निदेशक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224831
ई–मेल : projectdirectoresip@gmail.com

परियोजना प्रबंधक, पारितंत्र सेवाएं सुधार परियोजना
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
पो.ओ. न्यू फॉरेस्ट, देहरादून – 248006
फोन : 0135–2224803, 2750296, 2224823
ई–मेल : rawatrs@icfre.org; esippm@gmail.com

केंचुआ खाद

पोषक तत्वों से भरपूर जैविक उर्वरक

सतत् भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली

THE WORLD BANK
IBRD • IDA | WORLD BANK GROUP

केंचुआ खाद पोषक तत्वों से भरपूर जैविक खाद है जिसका प्रयोग जैविक खेती में सभी प्रकार की फसलों और उपजों की पैदावार बढ़ाने के लिए किया जाता है।

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा केंचुआ खाद बनाने का प्रशिक्षण

केंचुआ खाद तैयार करने वाले आइसीनिया प्रजाति के केंचुए

केंचुआ खाद
पोषक तत्वों से भरपूर उर्वरक

केंचुआ खाद बनाते समय ध्यान देने योग्य बातें

- ➥ केंचुआ खाद के बैड में ताज़े गोबर का प्रयोग कभी न करें, गोबर की गर्मी से केंचुए मर जाते हैं।
- ➥ केंचुआ खाद बनाते समय किसी भी प्रकार के कीटनाशक का प्रयोग कभी न करें।
- ➥ केंचुआ खाद के बैड में कभी भी कांच के टुकड़े, कील, पत्थर, प्लास्टिक, पॉलीथिन ना डालें।
- ➥ केंचुआ खाद बैड की सामग्री को हाथ ये या दस्ताने पहन के ऊपर नीचे करें, खुरपी, फावड़े आदि का प्रयोग ना करें अन्यथा केंचुए कटकर मर सकते हैं।
- ➥ सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि केंचुआ खाद के बैड को हमेशा छायादार स्थान पर ही बनायें या फिर इसके ऊपर शेड बनाकर रखें जिसमें आप बेल आदि भी चढ़ा सकते हैं।

केंचुआ खाद बनाने के लिए बैड/टांका

केंचुआ खाद बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के बैड/टांको का प्रयोग कर सकते हैं जैसे ईंट और सीमेंट से 10 से 12 फुट लम्बी, 2 फ़ीट चौड़ी, एक से डेढ़ फ़ीट तक ऊँची नाली तैयार कर सकते हैं, सीमेंट के बचे प्लास्टिक के थैलों को बांस या लकड़ी की फट्टियों से बांधकर भी इसी आकर के बैड या टाँके तैयार किये जा सकते हैं या बाजार से बने बनाये वर्मी बैड/टाँके भी इसके लिए प्रयोग किये जा सकते हैं। वर्मी बैड की लम्बाई सुविधा अनुसार रख सकते हैं, चौड़ाई व ऊंचाई इस प्रकार हो की बैड की सामग्री को हाथ से अच्छे से मिलाया जा सके।

केंचुआ खाद बनाने की विधि

- ➥ बैड की सतह गीली करके उसमें 2–3 इंच तक घांस या पराली या सूखी पत्तियां पुराल भर दे। इसके बाद बैड में घर का जैविक कचरा जैसे सब्जियों के छिलके, बचा भोजन आदि 10–15 दिन पुराने गोबर के साथ एक से डेढ़ फ़ीट तक भर दें। तत्पश्चात 5–6 दिन में एक बार पानी का छिड़काव करे।
- ➥ दो दिन के बाद बैड की सामग्री को उलटें पलटें और 5–6 दिन बाद इसमें हाथ डालने पर जब गर्मी का अहसास ना हो तब इसमें केंचुए डाल दें। दिए गए माप के बैड के लिए 3 किलोग्राम केंचुए पर्याप्त होते है।
- ➥ केंचुए डालने के बाद बैड को जूट की बोरी या केलों के पत्तो से ढक दें। अँधेरे में केंचुवों की गतिविधि तेज हो जाती है और परभक्षियों से भी रक्षा होती है। सर्दियों में एक बार व गर्मियों में 2 बार बैड में पानी का छिड़काव करें जिससे तापमान ठंडा रहे।
- ➥ केंचुवे गोबर व जैविक कचरे को खाकर 45–50 दिन में खाद तैयार कर देते है। इसके बाद पानी का छिड़काव बंद कर दे। जैसे जैसे खाद सूखती जाती है केंचुवे नीचे की ओर जाते रहते हैं और साथ में अगर नयी बैड बनी हो तो केंचुए उसमें चले जाते हैं।
- ➥ इस आकार की बैड से लगभग ढाई से तीन कुंतल तक खाद प्राप्त हो जाती है।

केचुआ खाद के लाभ

इसमें उपलब्ध लाखों जीवाणु मिटटी की उर्वरक क्षमता बढ़ाने के साथ साथ उसकी गुणवत्ता और जल अवशोषण क्षमता भी बढ़ाते है। यह खाद मिटटी से जल के वाष्पीकरण को भी कम करती है।

जैविक खेती का महत्त्व

जैविक खेती पारितंत्र (जल, जंगल, जमीन) और फसलों को रासायनों के दुष्प्रभाव से बचाकर मानव व प्रत्येक जीवधारी को स्वस्थ जीवन प्रदान करती है। जैविक खेती सतत भूमि एवं पारितंत्र प्रबंधन की सर्वोत्तम प्रणाली 'एकीकृत कृषि विकास' की महत्त्वपूर्ण घटक है जो पारितंत्र की सेवाओं को बढ़ाने में काफी कारगर है। जैविक खेती में उपयोग की जाने वाली जैविक खाद वह खाद है जिसमे रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जीवांश खाद तथा पोषक तत्वों आदि का उपयोग किया जाता है। यह भूमि की उर्वरता को लम्बे समय तक बनाये रखने के साथ–साथ पर्यावरण को प्रदूषित होने से भी बचाती है और इससे कम लागत में अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है।

केंचुआ खाद का उपयोग कैसे करें

फसल के लिए केचुआ खाद ढाई से तीन टन प्रति हेक्टेयर की दर से खेतों में मिटटी के साथ मिलायें। पेड़ों के लिए 1–10 किलोग्राम प्रत्येक पेड़ के हिसाब से और सब्जियों के लिए 5–10 टन प्रति हेक्टेयर की दर से इस्तेमाल करै। बुवाई के समय सिंचाई से पूर्व खेतों में इसे बुरक लें और अगर गमलों में आप इसका इस्तेमाल करना चाहते हैं तो एक भाग मिट्टी में 3 भाग केंचुआ खाद मिलाकर गमलों में डालें पर ध्यान रखें इस प्रकार से तैयार गमले को खुली धुप में न रखें। फिर इसमें पौंधे लगाकर शाम के समय पानी का हल्का हल्का छिड़काव करें।

भा.वा.अ.शि.प. द्वारा केंचुआ खाद बनाने का प्रशिक्षण